AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

झारखंड में नक्सलवाद

ORIGINAL ARTICLE

Author
धर्मेन्द्र कुमार
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय
हजारीबाग, झारखंड, भारत

शोध सार

नक्सलवाद एक विचारात्मक, राजनीतिक एवं आर्थिक संघर्ष है जो माओवाद एवं मार्क्सवाद के वर्ग संघर्ष पर आधारित है। वर्तमान समय में भी नक्सलवाद जैसी समस्या इसीलिए विद्यमान हैं क्योंकि पिछड़े एवं सुदूरवर्ती क्षेत्रों में सरकारी स्तर में ध्यान नहीं दिया जाता है तथा नक्सलवाद जैसी समस्या का समाधान पूर्ण रूप से सैनिक बल के द्वारा नही की जा सकती। आवश्यकता इस बात की हैं कि इन क्षेत्रों में शासन प्रशासन के जमीनी स्तर पर सरकारी योजनाओं के सही क्रियान्वयन और स्थानीय लोगों के साथ तालमेल स्थापित करनी होगी तभी नक्सलवादी समस्या को दूर किया जा सकता हैं।

मुख्य शब्द

विचारात्मक, माओवाद, मार्क्सवाद, प्रशासन, नक्सलवाद, समाधान.

प्रस्तावना

नक्सलवाद एक विचारात्मक, राजनीतिक एवं आर्थिक संघर्ष है जो माओवाद एवं मार्क्सवाद के वर्ग संघर्ष पर आधारित हैं। इसकी शुरुआत नक्सलबाडी आंदोलन 1967 में पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले के नक्सलबाडी क्षेत्र से हुई। इसी कारण नक्सलबाडी गाँव के नाम पर ही इस उग्रपंथी आंदोलन को नक्सलवाद कहा गया। नक्सलवादी आंदोलन का नेतृत्व चारू मजूमदार, कानू सान्याल एवं कन्हाई चटर्जी ने किसानों एवं आदिवासियों को सामंती शोषण के विरुद्ध पूँजीपतियों व भूपत्तियों के विरुद्ध सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक समानता स्थापित करने के उद्देश्य से प्रारम्भ हुआ। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य जन संग्राम की सहायता से अपना वर्चस्व स्थापित करना था।

नक्सलवादी आंदोलन में जन अदालत के माध्यम से चोरी, डकैती, दहेज के मामले, जमीन से संबंधित विवाद इत्यादि मामले की सुनवाई होती है। इसमें हत्या, अंग भंग, आर्थिक दण्ड, सिर मुण्डन, इत्यादि सजा दिये जाते और लागू किये जाते हैं। युवाओं को आकर्षित करने के लिए प्रचार–प्रसार किया जाता है तथा कई विद्यालय चलाये जाते हैं, जिसमें क्रांतिकारी किताबें पढ़ाये जाते हैं।

झारखण्ड में नक्सलवाद

झारखण्ड में नक्सलवाद की शुरुआत 1980 के दशक में हुआ। झारखण्ड में नक्सलवादी संगठन में सबसे ज्यादा प्रभाव M.C.C. का है। झारखण्ड में M.C.C.K. के अलावा TPC, PLFI, JPC, JSJMM, RCC इत्यादि हैं। झारखंड गठन के बाद से छोटी. बड़ी लगभग 3300 नक्सली घटनाएँ हो चुकी हैं जिनमें आम लोगों पर हमले, हत्या, पुलिस थानों पर हमले, मुठभेड़, रेलवे स्टेशन को जलाना एवं रेल पटरी को उखाड़ना इत्यादि शामिल है।

भारत में कुल 25 जिलों को अति माओवाद प्रभावित क्षेत्र घोषित किया गया है, जिसमें झारखण्ड के 8 जिले शामिल है। गिरिडीह, चतरा, गुमला, खूँटी, पश्चिम सिंहभूम, सरायकेला–खरसावाँ, लोहरदगा एवं लातेहार है। इनका प्रशिक्षण पहाड़ों के पास या घने जंगलों के बीच किया जाता हैं।

नक्सलवद के कारण

प्रभावित क्षेत्रों में आम लोगों के मूलभूत सुविधाओं का अभाव होता हैं। इन क्षेत्रों में पर्याप्त गरीबी होना, बेरोजगारी, अशिक्षा, भौगोलिक अवस्थिति, भूमि संबंधित विवाद, आजीविका संबंधी, विस्थापन एवं जबरन बेदखली, सामाजिक बहिष्करण, शासन संबंधी कारक, कमजोर न्याय प्रणाली के कारण नक्सली स्थानीय लोगों को बहला–फुसलाकर शामिल कर लेते हैं। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में राज्य सरकार और केन्द्र सरकार के द्वारा इन क्षेत्रों के विकास के लिये उचित फंड दिया जाता है जिसका ईमानदारी पूर्वक खर्च नहीं किया जाता है। वहां के सरकारी अधिकारी एवं स्थानीय नेता चाहते हैं कि यह व्यवस्था बरकरार रहे क्योंकि प्रभावित क्षेत्रो में विकास के नाम पर आने वाले पैसे से उनके जेब भरते रहें। पैसों की इस बंदरबांट में नक्सली कमांडरों और सरकारी व्यक्तियों की मिली भगत होती है। गाँव में संचार की सुविधा का अभाव नक्सलवाद में वृद्धि का एक प्रमुख कारण रहा हैं।

आय के स्त्रोत

नक्सलियों के आय का मुख्य स्रोत कारखानों, खनिज खानों, बीड़ी पत्तों के ठेकेदारों, चिमनी भट्टा, प्रखंड स्तर के पदाधिकारियो से लेवी, अपहरण, प्रखण्ड के माध्यम से संचालित विकास योजनाओं के ठेकेदारों से मोटी रकम वसूलते है। राजकीय उच्च पद के निर्माण के अधिकारियों से ऊंची रकम वसूलते है एवं अपहरण से मनमाना पैसा वसूलते है।

झारखण्ड में नक्सलवाद का विकास

झारखण्ड में नक्सलवाद के विकास का कारण शोषित, वंचित और पीडित लोगों के सामाजिक, आर्थिक प्रगति के लिए सरकार की पहुँच ना होना हैं। यदि आर्थिक दृष्टि से देखा जाये तो गरीबी और आर्थिक विषमता के चलते नक्सलवाद अपने चरम स्थिति पर है साथ ही साथ आदिवासी बहुल क्षेत्रों में खनिज संसाधन पर सरकारी और गैर–सरकार संस्थाओं द्वारा बिना नीति नियम के दोहन संबंधी कार्य जारी रहना हैं। हालांकि वर्तमान समय में नक्सल वादी संगठन का एक मात्र उद्देश्य लेवी वसूलना और सरकारी कार्यों में बाधा पहुँचाना हैं।

झारखण्ड में नक्सलवाद के प्रभाव

नक्सल प्रभावित क्षेत्र को रेड कोरिडोर (Red Corridor) के प्रभाव से जाना जाता है जिसका अर्थ भारत के पूर्वी, मध्य और दक्षिण के वे भाग जहाँ नक्सलवाद की स्थिति काफी मजबूत है, उसे रेड कॉरिडोर कहा जाता है। जून, 2021 के रिर्पोट के अनुसार, भारत के 10 राज्यों में इसका विस्तार पाया गया है जिसमें झारखण्ड, बिहार, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, केरल, आँध्र प्रदेश एवं तेलगांना है। झारखण्ड में 16 जिला रेड कोरिडोर के अंतर्गत आता है जिसमे पश्चिमी सिंहभूम, पूर्वी सिंहभूम, सरायकेला–खरसावाँ, गढवा, लातेहार, पलामू, धनबाद, हजारीबाग, गिरिडीह, बोकारो, चतरा, रांची खूंटी, सिमड़ेगा, लोहरदगा, गुमला आदि प्रभाव में है।

वर्तमान समय में झारखंड में नक्सलवाद का इतना अधिक प्रभाव है, जिसके कारण निम्न चुनौतियाँ देखने मिलती हैः

1. कानून एवं व्यवस्था के लिए समस्या।
2. सरकारी एवं निजी संपत्ति का भारी नुकसान
3. अधिकारियों एवं नागरिकों की हत्या।
4. महिला और बच्चों को नक्सलवादी आंदोलन में जबरदस्ती शामिल करना।
5. आपराधिक गतिविधियों में वृद्धि।

6. सामुहिक सौहार्दता में कमी।
7. राष्ट्र की एकता एवं अखंडता का खतरा।
8. राष्ट्र विरोधी शक्तियों का प्रोत्साहन।
9. संबंधित क्षेत का विकास प्रभावित होना।
10. देश की अंतराष्ट्रीय छवि का नुकसान।

नक्सलवाद को समाप्त करने के लिए सरकार द्वारा उठाये कदम

नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में रोजगारमुखी कौशल विकास योजना (रौशनी): रोशनी का प्रारम्भ आत्मसमर्पण करने वाली नक्सलियों को मुख्य धारा मे शामिल करने वाले को प्रोत्साहन राशि, जीवन बीमा, रोजगार, प्रशिक्षण, कृषि कार्यों के लिए भूमि, उनके बच्चों के लिए शिक्षा का प्रबंध आदि सुविधायें सरकार द्वारा की जाती है।

समाधान (SAMADHAN) पहल

गृह मंत्रालय भारत सरकार के द्वारा 2017 में प्रारम्भ किया गया। समाधान से तात्पर्यः

- S - Smart Leadership.
- A - Aggressive Strategy.
- M - MotivationAnd Training.
- A - Actionable intelligence.
- D - Dashboard based key key performance indicators and key result area.
- H - Harnessing technology.
- A - Action plan for each threat.
- N - NoAccess to financing.

झारखण्डः प्रमुख अभियान/ऑपरेशन

1. **ऑपरेशन कॉम्बः** धनबाद जिले के कुछ रेलवे स्टेशनों पर लगातार हो रही डकैतियों पर रोक लगाने के लिए इस अभियान की शुरुआत की गई। यह अभियान जून 1995 में झारखण्ड के गठन के पूर्व बिहार सरकार द्वारा शुरू किया गया था।
2. **ऑपरेशन अग्निदूतः** राज्य के पलामू तथा इससे सटे कुछ जिलो में बढ़ती उग्रवादी गतिविधियों पर लगाम लगाने के लिए ऑपरेशन अग्निदूत अभियान शुरू किया गया था।
3. **ऑपरेशन जंगलः** राज्य के गढ़वा जिले में बढ़ते उग्रवाद पर काबू पाने के लिए ऑपरेशन जंगल अभियान शुरू किया गया था।
4. **ऑपरेशन k2:** नक्सलियों के विरुद्ध यह अभियान बिहार विधानसभा चुनाव 2005 के समय बिहार झारखण्ड के सीमावर्ती क्षेत्रों में चलाया गया था।
5. **ऑपरेशन नई दिशाः** राज्य सरकार द्वारा यह अभियान नक्सलियों को मुख्य धारा में जोड़ने के लिए चलाया गया था। सरकार इस योजना के तहत आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों को नगद राशि के अलावा उनके पुर्नवास और सुरक्षा की पूर्ण व्यवस्था करती है।
6. **ऑपरेशन ग्रीन हंटः** भारतीय अर्द्धसैनिक बलों द्वारा नक्सलियों की संगठन के खिलाफ शुरू किये गये अभियान को मीडिया संगठनों द्वारा ऑपरेशन ग्रीन हंट का नाम दिया गया। यह अभियान नवम्बर 2009 से नक्सल प्रभावित 5 राज्यों झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, बिहार एवं उड़ीसा में प्रारम्भ किया गया।
7. झारखण्ड के सारण्ड़ा के जंगल में operation Jal, Operation Anaconda- 1, 2 चलाया गया।
8. 2013 में नक्सलियों के धर–पकड़ के लिए Operation Khoj
9. लातेहार जिला के बुढ़ापहाड़ में Operation Octopus (2022) चलाया गया।

झारखण्ड में नक्सलवाद की वर्तमान स्थिति

झारखण्ड के 5 जिलो को नक्सलमुक्त घोषित करने की तैयारी चल रही है जिनमें धनबाद, दुमका, पूर्वी सिंहभूम, हजारीबाग, पलामू ये अब पूरी तरह से नक्सल मुक्त घोषित किये जायेंगे। वहीं गिरिडीह, गुमला, लातेहार, लोहरदगा एवं पश्चिम सिंहभूम फिलहाल नक्सलवाद प्रभावित जिले में शामिल रहेंगे। राज्य के 6 जिले चतरा, सरायकेला–खरसावाँ, खूँटी, राँची, बोकारो एवं गढवा में लगभग नक्सलवाद समाप्ति की ओर है। आगे भी नक्सलियों के खिलाफ नक्सल विरोधी अभियान जारी रहेंगे।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में भी नक्सलवाद जैसी समस्या इसीलिए विद्यमान हैं क्योंकि पिछड़े एवं सुदूरवर्ती क्षेत्रों में सरकारी स्तर में ध्यान नहीं दिया जाता है तथा नक्सलवाद जैसी समस्या का समाधान पूर्ण रूप से सैनिक बल के द्वारा नही की जा सकती। आवश्यकता इस बात की हैं की इन क्षेत्रों में शासन प्रशासन के जमीनी स्तर पर सरकारी योजनाओं के सही क्रियान्वयन और स्थानीय लोगों के साथ तालमेल स्थापित करनी होगी तभी नक्सलवादी समस्या को दूर किया जा सकता हैं।

संदर्भ सूची

1. मोहती, मनोरंजन (1980), *रिवोल्यूशनरी वाईलेन्स–ए स्टडी ऑफ माओइस्ट मूवमेंट इन इंडिया,* नई दिल्ली, स्टेलिंग पब्लिशर्स।
2. राम, मोहन (1972), *माओइसम इन इंडिया,* विकास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
3. जोहरी, जे. सी. (1972), *नक्सलाइट पोलिटिक्स इन इंडिया,* इंस्टीट्यूट ऑफ इंस्टीट्यूशनल एडं पार्लियामेन्ट्री स्टीडीज, रिसर्च पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. बनर्जी, सुभन्त (1980), इन द बैंक ऑफ नक्सलवाड़ी ए हिस्ट्री ऑफ दी नक्सलाइड्स मूवमेंट इन इंडिया, सुवर्णरेखा पब्लिशर्स, कलकत्ता।
4. घोष, शंकर (1974) द नक्सलाइट मूवमेंट, ए माओइस्ट एक्सपेरिमेंट ऑफ कर्नल के. एल. मुखोपाध्याय, सुवर्णरेखा पब्लिशर्स, कलकत्ता।
5. Aggarwal, P.K. (2010) *Nexalism:Causes and cure,* Manas Publication, New Delhi.
6. Ahluwalia, V.K. (2013) *Reel Revolation 2020 and beyond: Strategic Challenges to Resolve Naxalism.* Bloomsbury in India, New Delhi.
7. Banjerjee, Sumanta (2006) *Naxlite - Through the Eyes of Police,* Subarnarekha Publishers, Kolkata.
8. Chakravarti, Sudeep (2008) Red Sun Travels in 20th Century, Offset Printer, Delhi.
9. Ramchandran, Sudha (2010) *The Moist conflict in Dandakaranya,* Centre for Security Analysis, Chennai.
10. Raman, P.V. (2008) *State Response to the Moist Challenge: an Overvview,* National book Trust, New Delhi.

Webliography

11. www.india.gov.in, Assess on 11 January 2024.
12. www.mha.gov.in, Assess on 11 January 2024.
13. www.jharkhand.gov.in, Assess on 13 January 2024.
14. www.jhpolice.gov.in, Assess on 13 January 2024.
15. www.hazaribagh.nic.in Naxalism: Causes and cure. New Delhi: Manas Publication, Assess on 14 January 2024.

——==00==——